**International Journal of Humanities and Social Science Research**
**ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22**
**Received: 23-06-2019; Accepted: 26-07-2019**
**www.socialsciencejournal.in**
**Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 216-222**

# जनसंपर्क और विज्ञापन एवं दूरस्थ शिक्षा (उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के विशेष सन्दर्भ में)।

**डॉ0 राकेश चन्द्र रयाल**

जनसंपर्क अधिकारी, जनसपर्क अनुभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल,

सारांश

उपरोक्त अध्ययन से ज्ञात होता है कि दूरस्थ शिक्षा पद्धति या उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के विशेष संदर्भ में जनसंपर्क एवं विज्ञापन की उपयोगिता की बात करें तो विश्वविद्यालय के प्रचार – प्रसार एवं उत्थान में जनसंपर्क एवं विज्ञापन ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। मुक्त शिक्षा प्रणाली घर बैठ कर या नौकरी के साथ- साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने की एक महत्वपूर्ण प्रणाली है। आप अपनी नौकरी-पेशे के साथ – साथ शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं। यहां छात्र सीधे तौर पर न विश्वविद्यालय के सम्पर्क में रहता है और न अपने कालेज एवं अध्यापक के, उसे दिये जाने वाली अध्ययन सामग्री ही उसका अध्यापक और प्राध्यापक होता है। ऐसे में छात्र से सम्पर्क स्थापित करने के लिए उसे संस्थान की हर गतिविधियों से अवगत कराने के लिए जनसंपर्क एवं विज्ञापन का बहुत बडा योगदान है।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय पी0 एच0 डी0, डिग्री, पी0 जी0 डिप्लोमा, डिप्लोमा एवं प्रमाण पत्रों में कम से कम 90 पाठ्यक्रमों का संचालन पूरे राज्य में अपने 110 अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से कर रहा है। यहां विश्वविद्यालय को अपनी हर एक शैक्षिक गतिविधियों, आवश्यक सूचनाओं, जानकारियों को संचार के माध्यमों एवं संवाद- सूचनाओं के अन्य विधाओं के द्वारा छात्र- छात्राओं तक पहुंचानी होती है। इसके लिए जनसंपर्क एवं विज्ञापन जनसंचार व जनसंवाद के प्रभावी माध्यम हैं। छात्र- छात्राओं के अलावा विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित 8 क्षेत्रीय कार्यालयों 110 अध्ययन केन्द्रों के मध्य समन्वय स्थापित करना भी आवश्यक है, दूसरी ओर देखें तो जनता और विशेषकर उत्तराखण्ड की भौगोलिक –सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर देखें तो यहां के अधिकतम लोग दूरस्थ शिक्षा के बारे में और इसके महत्व से अनजान हैं, ऐसे में लोगों को दूरस्थ शिक्षा के बारे में समझाना और इसके महत्व से अवगत कराने में जनसंपर्क और विज्ञापन विभाग महत्वपर्ण ूा भूमिका निभा रहा है।

इस शोध पत्र में यह जानने की पूरी कोशिश की गयी थी कि किस तरह से दूरस्थ शिक्षा मे और इसके प्रचार – प्रसार में जनसंपर्क और विज्ञापन का महत्व है, आज के संदर्भ में न्यू मीडिया या डिजिटल मीडिया के उपयोग से किस तरह जनसंपर्क और विज्ञापन जैसी विधाओं को प्रभावी बनाया जाये इस पर भी अध्ययन किया गया जिससे पता चला कि वेब मीडिया या डिजिटल मीडिया के उपयोग में भी उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय काफी अग्रणीय है।

**मूल शब्द:** उत्तराखण्ड, विश्वविद्यालय, कोशिश, शिक्षा

## प्रस्तावना

लोकतांत्रिक समाज में सरकार व प्रशासन की सफलता इस तथ्य पर निर्भर करती है कि जनमत अथवा लोकमत किस सीमा तक प्रशासन के समर्थन में है ? जनता को जब तक सरकारी नीतियों व योजनाओं का ज्ञान नहीं हो जाता तब तक जनता के समर्थन या विरोध का प्रश्न निराधार है।

अत: लोक प्रशासन / लोक संस्थाओं का यह कर्त्तव्य है कि वह प्रशासनिक नीतियों या संस्था की योजनाओं एवं कार्य संचालन के सम्बन्ध में जनता को जानकारी प्रदान करें तथा उनकी भी राय जान लें । जनसम्पर्क या लोक सम्पर्क से तात्पर्य प्रशासनिक कार्यों की सूचना मात्र नहीं है । यह केवल एक प्रचार मात्र भी नहीं है । विभिन्न विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत परिभाषाओं के आधार पर इसे सही रूप में समझा जा सकता है ।

जे. एल. मैकेंजी के कथनानुसार- "प्रशासन में लोक सम्पर्क अधिकारी वर्ग तथा नागरिकों के बीच पाये जाने वाले प्रधान एवं गौण सम्बन्धों तथा इन सम्बन्धों द्वारा स्थापित प्रभावों एवं दृष्टिकोणों की परस्पर क्रियाओं का मिश्रण है ।"

संक्षेप में कहा जा सकता है कि लोक सम्पर्क जनता को सरकारी क्रियाकलापों से परिचित कराने की वह नीति है

जिसमें प्रशासन जनता की राय या मत जानने के बाद स्वयं को जन इच्छाओं के अनुकूल ढालने का प्रयास करता है ।

विज्ञापन की यदि हम बात करें तो विज्ञापन जनसम्पर्क का एक ऐसा माध्यम है जो किसी भी सरकारी-गैरसरकारी संस्था/ सरकार/ औद्योगिक संस्थाओं के लिए एक सरल और शसक्त है। या हम कहें तो जनसम्पर्क और प्रचार कार्य के लिए विज्ञापन का विशेष महत्व है। यद्यपि विज्ञापन वाणिज्य तथा व्यावसायिक क्षेत्र का अभिन्न अंग माना जाता है लेकिन जनसम्पर्क का भी यह अभिन्न अंग है। विज्ञापन का जो वास्तविक लक्ष्य है वह जनमत को अपने अनुकूल तैयार करना है। वह लक्ष्य व्यवसायिक हो, औद्योगिक हो या सरकारी- गैर सरकारी हो।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा पद्धति द्वारा उच्च शिक्षा प्रदान कराने वाला एक शिक्षण संस्थान है। इसकी स्थापना उत्तराखण्ड सरकार द्वारा 2005 में की गयी थी। विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य राज्य के उस वर्ग को उच्च शिक्षा प्रदान कराना था जो किसी कारणवश उच्च शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ या वंचित रहा हो।

किसी भी संस्था के लिए जनसंपर्क एक महत्वपूर्ण कार्य है, जिसके तहत संस्था के आंतरिक एवं बाह्य सम्बन्धों का प्रबंध किया जाता है। जिसके माध्यम से संस्था के अंदर तथा संस्था के बाहरी सम्बन्धित विभागों या लोगों से सम्बन्ध स्थापित कर सम्बन्धों में घनिष्ठता लाने के साथ-साथ व्यवस्थित रूप से बनाये रखने का प्रयास किया जाता है।

## उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के संदर्भ में जनसंपर्क की उपयोगिता

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की कार्य प्रणाली अन्य संस्थागत विश्वविद्यालयों की तुलना में भिन्न है। उ0 मु0 विश्वविद्यालय के संदर्भ में यदि जनसंपर्क के महत्व को देखा जाय तो यह अन्य संस्थागत विश्वविद्यालयों से काफी ज्यादा है। क्योंकि यहां छात्रों से विश्वविद्यालय का सीधा संपर्क नहीं हो पाता है। इसके अन्य महत्वपूर्ण कारण भी हैं जो निम्नवत हैं-

1. दूरस्थ शिक्षा पद्धति अभी इतना प्रचलित नहीं है कि हर व्यक्ति इसे भलिभांति जानता हो, इसलिए इसका प्रचार और लोगों तक इसकी उपयोगिता व उद्देश्य को समझाने के लिए जनसंपर्क की अत्यन्त आवश्यकता महसूस होती है।
2. उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का मुख्यालय हल्द्वानी में है तथा पूरे प्रदेश में इसके 8 क्षेत्रीय कार्यालय हैं, जिनमें 4 कुमाऊ क्षेत्र के हलद्वानी, रानीखेत,बागेश्वर तथा पिथोरागढ़ में तथा 4 गढ़वाल क्षेत्र के रूड़की, देहरादून, पौड़ी तथा उत्तराकाशी में स्थित हैं, जो भौगोलिक रूप से मुख्यालय से काफी दूर हैं। इन क्षेत्रीय कार्यालयों के अंतर्गत लगभग 110 अध्ययन केन्द्र हैं। विश्वविद्यालय के सफल संचालन और सभी केन्द्रों के मध्य उचित सवांद स्थापित करने व सम्बन्ध बनाये रखने हेतु जनसंपर्क की नितांत आवश्यकता है, जिससे विश्वविद्यालय की क्रियाकलापों व इन केन्द्रों से जुड़े सभी छात्रों को समय पर उचित सुविधाएं प्राप्त हो सके और विश्वविद्यालय अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सके।
3. मुक्त विश्वविद्यालय में समय पर अध्ययन केन्द्रों तक अध्ययन सामग्री पहुंचाना तथा समय पर परीक्षाएं सम्पन्न कराना दोनों ही महत्वपूर्ण कार्य हैं। इन दोनों कार्यों के सफल संचालन हेतु अध्ययन केन्द्रों तथा परीक्षा केन्द्रों का विश्वविद्यालय मुख्यालय से बराबर सवांद स्थापित करवाने हेतु जनसंपर्क की महत्वपूर्ण भूमिका है।
4. मुक्त विश्वविद्यालय के अंतर्गत परीक्षा विभाग, एमपीडीडी, आरएसडी तथा प्रवेश विभाग महत्वपूर्ण विभाग हैं जो छात्र तथा अध्ययन केन्द्रों से सम्बन्धित होते हैं, जिनके द्वारा अध्ययन केन्द्र व छात्रों को अध्ययन सामग्री भेजी जाती है, परीक्षाएं नियंत्रित कराई जाती हैं, अध्यन केन्द्र व क्षेत्रीय कार्यालयों को नियंत्रित किया जाता है तथा छात्रों की प्रवेश से सम्बन्धित प्रक्रियाएं सम्पन्न करायी जाती हैं। इनके द्वारा कार्यों के सफल सम्पादन हेतु इन विभागों का आपस में सवांद होना या तालमेल होना अत्यंत आवश्यक है, जो जनसंपर्क द्वारा किया जा रहा है।

मुक्त विश्वविद्यालय के संदर्भ में उपरोक्त समस्त कार्यो, उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जनसंपर्क आवश्यक है, जिसे एक जनसंपर्क अधिकारी, जनसंपर्क प्रबन्धक व जनसंपर्क व्यक्ति विभिन्न माध्यमों के द्वारा दो प्रकार से सम्पन्न कराता है, जो निम्नवत है-

1. आंतरिक जनसंपर्क
2. बाह्य जनसंपर्क

### आंतरिक जनसंपर्क

यहां आंतरिक जनसंपर्क का तात्पर्य विश्वविद्यालय के आंतरिक ढांचे में जनसंपर्क करना है, या कहें विश्वविद्यालय के आंतरिक विभागों व कर्मचारियों एवं शिक्षकों के मध्य सम्बन्धों का प्रबंध करना है, इसके लिए निम्नलिखित माध्यम उपयुक्त हैं-

1. **गृह पत्रिका** – यह संस्था के कर्मचारियों में सवांद स्थापित करने, सम्बन्धों को बरकरार रखने और कर्मचारियों व अधिकारियों के बीच विचारों के आदान-प्रदान व भावनाओं की अभिव्यक्ति का सरल व महत्वपूर्ण माध्यम है। '**उडान**' विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका है।
2. **विचार गोष्ठी-** समय-समय पर विश्वविद्यालय या संस्थानों में विचार गोष्ठियां होनी चाहिए, जिसमें सभी कर्मचारी व अधिकारी किसी महत्वपूर्ण विषय पर अपने-अपने विचार रख सके तथा किसी समस्या के समाधान के लिए सुझाव दे सकें।
3. **सूचना पट-** विश्वविद्यालय में एक सूचना पट होना चाहिए जिसमें विश्वविद्यालय में हो रही हर एक गतिविधियों व क्रियाकलापों व आदेशों की सूचना चस्पा किये जाय।
4. **बैठकें**- समय –समय पर अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच बैठकों का आयोजन होना चाहिए, जिससे कार्यों की प्रगति व निष्पादनों की जानकारी प्राप्त हो सके और कुछ महत्वपूर्ण कार्यो हेतु निर्देशित किये जाय।
5. **इंटरानेट** – इंटरानेट भी आंतरिक जनसंपर्क का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, न्यू मीडिया और इंटरनेट के समय में विश्वविद्यालय के कार्यो के निष्पादन हेतु विश्वविद्यालय के आंतरिक ताल-मेल हेतु सवांद स्थापित करने के लिए इंटरानेट की महत्वपूर्ण भूमिका है। **intranet.uou.ac.in** विश्वविद्यालय की इंटरानेट साइट है।

**बाह्य जनसंपर्क**

बाह्य जनसंपर्क के लिए बाह्य जनसंचार आवश्यक है, यहां पर बाह्य जनसंपर्क का अर्थ संस्था या विश्वविद्यालय से सम्बन्धित बाहरी विभागों, अध्ययन केन्द्रों, संस्थानों तथा छात्रों से सम्बन्ध स्थापित करना या सम्बन्धों को बनाये रखना है। यह किसी विशेष उद्देश्य या विश्वविद्यालय के कार्यो की पूर्ति के लिए किया जा सकता है। यह जनसंपर्क कार्य विश्वविद्यालय के जनसंपर्क अधिकारी द्वारा निम्न माध्यमों से किया जा रहा है-

**1. मीडिया**

पत्रिका, समाचार पत्र, रेडियो, टीवी, केविल नेटवर्क, इंटरनेट, न्यू मीडिया, सोशल मीडिया, मोबाईल आदि।

निम्न प्रक्रियाओं के माध्यम से –

- प्रेस विज्ञप्ति
- प्रेस वार्ता
- पत्रकार वार्ता
- प्रेस टूर
- प्रेस नोट
- प्रेस ब्रिफिंग

2. लोक मंच –
3. गोष्ठियां
4. बैठकें
5. प्रदर्शनी
6. पम्पलेट
7. साईन बोर्ड
8. ब्रॉउसर
9. डैरियां
10. हैण्ड विला
11. सोशल मीडिया
12. ब्लॉग
13. यू ट्यूब
14. विज्ञापन
15. वृत्त चित्र

**विश्वविद्यालय से जुडी संस्थायें-**

1. यूजीसी
2. डी0 ई0 बी0
3. राजभवन (सूचना विभाग)
4. अन्य मुक्त विश्वविद्यालय या विश्वविद्यालय
5. अन्य सम्बन्धित सरकारी/गैर सरकारी संस्थाएं जिसके साथ मिलकर विश्वविद्यालय कोई शैक्षिक या शोध कार्य कर रहा हो।

**जनसंपर्क एवं विज्ञापन विभाग**

समय समय पर प्रवेश के दौरान विश्वविद्यालय का जनसंपर्क एवं विज्ञापन विभाग पूरे राज्य में प्रचार-प्रसार कार्य क्रम का आयोजन करता है, जिसमें राज्य के दूरस्थ क्षेत्रों में जाकर गोष्ठियां की जाती हैं, जिनमें स्थानीय प्रतिनिधि, स्थानीय छात्र- छात्राएं, स्थानीय पत्रकारों को शामिल किया जाता है, जिन्हें दूरस्थ शिक्षा या उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली व विश्वविद्यालय में संचालित कार्यक्रमों की जानकारी दी जाती हैं, वहां मौजूद स्थानीय पत्रकार गोष्ठी में विश्वविद्यालय के जनसंपर्क एवं विज्ञापन विभाग के प्रतिनिधियों द्वारा दी गयी जानकारी व गोष्ठी में हुई चर्चा को अपने अपने समाचार चैनलों में प्रकाशित एवं प्रसारारित करते हैं जिससे स्थानीय स्तर पर विश्वविद्यालय की समस्त जानकारी लोगों तक पहुंचती है और गोष्ठी में मौजूद समस्त प्रतिभागी भी समस्त जानकारियों से अवगत होते हैं और प्राप्त जानकारी का स्वयं लाभ लेते हैं या अपने आस- पास के लोगों को देकर उन्हें भी लाभान्वित करते हैं। ,

विश्वविद्यालय की स्थापना 2005 में हुई थी, अब तक विश्वविद्यालय कम से कम प्रत्येक वर्ष कई गोष्ठियां करवा चुका है, इन गोष्ठियों में प्रचार – प्रसार सामग्री बैनर, फलैक्स, पम्पलेट, आदि वितरित की जाती हैं। जिनमें विश्वविद्यालय द्वारा संचालित समस्त पाठ्यक्रमों की विस्तृत जानकारी एव सम्पक सूत्र होते हैं।

**प्रचार – प्रसार से सम्बन्धित अखबारों की कुछ कतरनें**



यूओयू में 15 सितंबर तक दाखिले



हिन्दुस्तान

यूओयू में 15 सितंबर तक ले सकेंगे प्रवेश

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) में प्रवेश की तिथि 31 अगस्त से बढ़ा कर 15 सितंबर कर दी है। अब बिना विलंब शुल्क के अभ्यर्थी 15 सितंबर तक और विलंब शुल्क 500 रुपये के साथ 30 सितंबर तक दाखिला ले सकते हैं। विवि के जनसंपर्क अधिकारी राकेश रयाल ने बताया यह तिथि विवि के सभी पुराने विद्यार्थियों पर भी लागू होगी। विद्यार्थी रिजल्ट का इंतजार किए बिना अगले सेमेस्टर में प्रवेश ले सकेंगे।

ओपन यूनिवर्सिटी में 15 सितंबर तक होंगे प्रवेश

देहरादून। उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी में अब 15 सितंबर तक प्रवेश होंगे। यूनिवर्सिटी में प्रवेश की अंतिम तिथि पहले 31 अगस्त थी। विश्वविद्यालय के जनसंपर्क अधिकारी डा. राकेश रयाल ने बताया कि अब 15 सितंबर तक बगैर विलम्ब शुल्क के एडमिशन होंगे। 15 सितंबर के बाद पांच सौ रुपये अतिरिक्त फीस देकर 30 सितंबर तक प्रवेश लिया जा सकता है। दाखिला प्रक्रिया ऑनलाइन होगी। डा.रयाल ने बताया कि विश्वविद्यालय में पढ़ रहे छात्र भी उक्त तिथि तक एडमिशन ले सकते हैं।

हिन्दुस्तान

यूओयू ने सुदूरवर्ती क्षेत्रों में उच्चशिक्षा का प्रसार किया



यूओयू ने सुदूरवर्ती क्षेत्रों में उच्चशिक्षा का प्रसार किया

हल्द्वानी | मुख्य संवाददाता

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के जनसम्पर्क एवं प्रचार प्रसार विभाग ने दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के प्रचार के लिए प्रदेशभर में अभियान चलाया। इस दौरान विश्वविद्यालयों के 6 कार्मिकों की टीम ने सुदूरवर्ती क्षेत्रों के लोगों से विवि के स्टडी सेंटरों के माध्यम से उच्चशिक्षा से जुड़ने का आह्वान किया।

विश्वविद्यालय के जनसम्पर्क अधिकारी डॉ. राकेश रयाल ने कहा कुलपति के निर्देश पर विवि की ओर से उच्चशिक्षा आपके द्वार कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके तहत राज्य के पर्वतीय क्षेत्रों के लिये 2 टीमें बनाई गई थी। कुमाऊं की टीम ने पिथौरागढ़, मुनस्यारी, धारचूला, लोहाघाट, नैनीताल, रानीखेत, बागेश्वर में अभियान चलाया। टीम में डॉ. कमल देवलाल, डॉ. श्याम कुंजवाल तथा राजेंद्र कबीरा शामिल रहे।



यूओयू में साल में दो बार दाखिले



उत्तराखंड मुक्त विवि के पाठ्यक्रमों की दी जानकारी

दैनिक जागरण

उच्च शिक्षा की अलख जगाएगा मुक्त विश्वविद्यालय

दूरस्थ शिक्षा के उद्देश्य की जानकारी दी

घर बैठे आप भी पा सकते हैं उच्च शिक्षा

लोगों ने जानीं दूरस्थ शिक्षा की उपयोगिता

**जनसंपर्क विभाग द्वारा आयोजित प्रचार–प्रसार कार्यक्रमों से सम्बन्धित कुछ छाया चित्र –**

**विज्ञापन**

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के संदर्भ में यदि विज्ञापन के महत्व की बात करें तो यह बहुत ही ज्यादा है, क्योंकि यह दूरस्थ शिक्षा पद्धति का विश्वविद्यालय हैं, यहां छात्र विश्वविद्यालय से सीधे तौर पर नहीं जुडता है, उसे विश्वविद्यालय की समस्त गतिविधियों से अवगत कराने के लिए व जोडने के िलए विज्ञापन एक सरल व शुल्भ माध्यम है। प्रत्येक वर्ष सत्र प्रारम्भ होते ही सभी समाचार पत्र – पत्रिकाओं में एवं सोशल साईटस में विश्वविद्यालय की जानकारी व संचालित समस्त पाठ्यक्रमों की जानकारी विज्ञापन के माध्यम से दी जाती है, तथा बीच- बीच में समस्त गतिविधियों की जानकारी भी विज्ञापन द्वारा छात्रों को दी जाती हैं।

**विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित कुछ विज्ञापन की छाया प्रतियां –**

जहां 2006 में विश्वविद्यालय लगभग 600 छात्र – छात्राएं थीं, वहीं वर्तमान सत्र में विश्वविद्यालय के 110 अध्ययन केन्द्रों पर लगभग 70 हजार छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं । आज यह राज्य का सबसे बडा राजकीय विश्वविद्यालय बनने जा रहा है। जहां लोग प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा या मुक्त विश्वविद्यालय को जानते तक नहीं थे आज उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय के विज्ञापन और जनसंपर्क विभाग के अंतर्गत प्रकाशित – प्रसारित विज्ञापन और प्रचार- प्रसार का ही नतीजा है कि आज राज्य के दुर्गम से सुगम तक के हर नागरिक दूरस्थ शिक्षा को जानता है और उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली से परिचित है। यही कारण है कि आज राज्य में विश्वविद्यालय की छात्रसंख्या 70 हजार को छू गई है।

**वेब मीडिया या इंटरनेट**

वेब मीडिया या न्यू मीडिया के साधनों से भी विश्वविद्यालय के जनसंपर्क एवं विज्ञापन विभाग ने लोगों को विश्वविद्यालय से जोडने या विश्वविद्यालय में संचालित पाठयक्रमों की जानकारी देकर उन्हें लाभान्वित करने का कार्य किया है।

विश्वविद्यालय की वेबसाईट www.uou.ac.in पर समस्त सूचनाएं, विज्ञापन, आवश्यक जानकारी, पाठ्यक्रम, अध्ययन सामग्री का औडियो, वीडिया, टेक्सट स्वरूप उपलब्ध है। विश्वविद्यालय से सम्बन्धित किसी भी तरह की जानकारी यहां उपलब्ध हैं। इसके अलावा आवेदन करने से लेकर डिग्री प्राप्त करने की प्रकिया सभी ऑनलाईन उपलब्ध है। हम यह कह सकते हैं कि डिजिटल उपयोगिता में उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय काफी अग्रणीय है।

इसके अलावा विश्वविद्यालय की कुछ सोशल आई डी इस प्रकार हैं जिनके माध्यम से विश्वविद्यालय लगातार जनता से अपने छात्रों से जुड़ा है –

1- Facebook.com/uoulive
2- Youtube.com/uoulive
3- Twitter.com/uoulive
4- Radio app on google play store (Hello Haldwani 91.2FM)

**सन्दर्भ सूची –**

1. सेनगुप्ता सैलेश, जनसंपर्क एवं संचार प्रबन्घन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जनयपुर, राजस्थान, 2009।
2. आई सी टी अनुभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय।
3. जनसम्पर्क एवं विज्ञापन विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय।
4. Grunig, James E; Hunt, Todd (1984), Managing Public Relations (6th ed.), Orlando, FL: Harcourt Brace Jovanovich.

5. Roos, Dave. "What Is Public Relations?" HowStuffWorks. N.p., 5 Apr. 2008. Web. 25 Nov. 2014.
6. सिंह, मीनाक्षी, जनसम्पर्क प्रबन्धन, ओमेगा प्रकाशन अंसारी रोड, दिरयागंज, नई दिल्ली।
7. शर्मा, कुमुद, विज्ञापन की दुनिया, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 2010 ।